

नेक बनने का नुस्खा

पन्द्रहवीं सदी की अजीम इल्मी व रुहानी शाखिमय्यत

इस्लामी बहनों
के लिये

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुनत, बानिये दा'वते इस्लामी

हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अंतार कादिरी र-ज़वी

ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीकों पर मुश्तमिल शरीअतो तरीकत का जामेअ मज्मूआ

63 म-दनी इन्त्यामात

63 Madani In-aamaaT (Hindi)

ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं। इन के मुताबिक आसानी से अमल करने का तरीकए कार आखिर में दिया गया है। मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाखे से किताब जनत के तलब गारों के लिये म-दनी गुलदस्ता तलब फ़रमा सकते हैं।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी) 

म-दनी वज़ाहतें

म-दनी इन्हामात की वज़ाहतों और रिअयतों से मु-तअल्लिक सुवालात के जवाबात के लिये तन्जीमी तौर पर तीन क़ाइदे मुकर्रर किये गए हैं।

क़ाइदा नम्बर 1 : बा'ज़ म-दनी इन्हामात चन्द “जुज़इय्यात” पर मुश्तमिल हैं।

म-सलन : तहज्जुद, इशराक़, चाशत, अब्बाबीन वाला म-दनी इन्हाम, इस म-दनी इन्हाम में 4 जुज़ हैं, लिहाज़ा ऐसे म-दनी इन्हामात पर अक्सर पर अ़मल होने की सूरत में तन्जीमी तौर पर अ़मल मान लिया जाएगा।

(अक्सर से मुराद आधे से ज़ियादा म-सलन 100 में से 51 अक्सर कहलाएंगा)

क़ाइदा नम्बर 2 : बा'ज़ म-दनी इन्हामात ऐसे हैं जिन पर किसी दिन अ़मल न होने की सूरत में तन्जीमी तौर पर दूसरे दिन अ़मल की तरगीब है।

म-सलन : चार सफ़हात फैज़ाने सुन्त, **313** बार दुर्लभे पाक पढ़ने या कन्जुल ईमान शरीफ़ से कम अज़ कम **3** आयात की तिलावत (मअ़ तरजमा व तफ़सीर) करने से महरूमी रही। इस सूरत में जितने दिन नाग़ा हुवा, बा'द वाले दिनों में रह जाने वाले दिनों का हिसाब लगा कर उतनी ही मर्तबा अमल करने पर तन्ज़ीमी तौर पर अमल मान लिया जाएगा।

क़ाइदा नम्बर 3 : बा'ज़ म-दनी इन्डियामात ऐसे हैं जिन पर अमल की आदत बनाने में वक़्त लगता है।

म-सलन : क़हक़हा, तू तुकार से बचने और निगाहें झुका कर चलने की आदत बनाने वाले इन्डियामात, ऐसे म-दनी इन्डियामात पर ज़मानए कोशिश के दौरान अमल मान लिया जाएगा। (कोशिश पाए जाने के लिये ज़रूरी है कि कम अज़ कम दिन में 3 दफ़आ अमल करे)

यौमिच्या 47 म-दनी इन्हामात

पहला द-रजा 17 म-दनी इन्हामात

(1) क्या आज आप ने कुछ न कुछ जाइज़ कामों से पहले अच्छी अच्छी नियतें कीं ? नीज़ कम अज़ कम दो को इस की तरगीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(2) क्या आज आप ने पांचों नमाजें अदा फ़रमाई ? (अपने घर में नमाज़ के लिये कोई जगह मख्यूस करना मुस्तहब है इसे मस्जिदे बैत कहते हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(3) क्या आज आप ने नमाजे पञ्जगाना के बाद नीज़ सोते वक्त कम अज़ कम एक एक बार आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख़लास और तस्बीहे फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पढ़ी ? नीज़ रात में सू-रतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(4) क्या आज आप ने बातचीत, चलत फिरत, उठाना रखना, खाना पकाना, फ़ोन पर गुप्त-गू वगैरा तमाम कामकाज मौकूफ़ कर के अज़ान का जवाब दिया ? (अगर पहले से खा पी रही हों और अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो खाना पीना जारी रख सकती हैं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(5) क्या आज आप ने अपने शा-जरे के कुछ न कुछ अवराद और कम अज़ कम 313 बार दुर्सद शरीफ पढ़ लिये ? नीज़ कन्जुल ईमान शरीफ से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तरजमा व तफ़सीर) तिलावत करने या सुनने की सआदत हासिल की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(6) क्या आज आप ने आयन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर عَزُّ وَجْلُ مَالِكِ الْحَمْدِ اللَّهُ عَزُّ وَجْلُ مَالِكِ الْحَمْدِ (या'नी अगर अल्लाह عَزُّ وَجْلُ ने चाहा तो) और मिजाज पुर्सी पर शिकवा करने के बजाए عَزُّ وَجْلُ كُلِّ خَالٍ (या'नी हर हाल में अल्लाह عَزُّ وَجْلُ का शुक्र है) और किसी ने 'मत को देख कर عَزُّ وَجْلُ مَا شَاءَ اللَّهُ عَزُّ وَجْلُ (या'नी जो अल्लाह عَزُّ وَجْلُ की मरज़ी) या بَارَكَ اللَّهُ عَزُّ وَجْلُ بِرَبِّ الْكَوَاكِبِ (या'नी अल्लाह कहे जाएं उस वक्त मा'ना पर नज़र रखिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(7) आज आप ने (घर में भी और बाहर भी) हर छोटे बड़े हक्ता कि वालिदा (और एक दिन के बच्चे को भी) तू कह कर मुखातब किया या आप कह कर ? नीज़ हर एक से दैराने गुफ्त-गू "हँ!" कह कर बात की या "जी !" कह कर (आप और जी कहना दुरुस्त जवाब है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(8) क्या आज आप ने सलाम का जवाब और छोंकने वाले के
الحمد لله كहने पर फौरन इतनी आवाज से जवाबन ﷺ कहा
कि दोनों ने सुन लिया ? (गैर महरम के सलाम और छोंक का जवाब
इतनी आवाज से दें कि सिर्फ आप खुद ही सुन सकें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(9) क्या आज आप ने दौराने गुफ्त-गू कुछ न कुछ दा'वते इस्लामी की
इस्तिलाहात इस्ति'माल फ़रमाई ? नीज़ तलफ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये
कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(10) क्या आज आप ने हत्तल इम्कान सुन्नत के मुताबिक़ बैठ कर मअ् पदें
में पर्दा, खाने पीने के दौरान मिट्टी के बरतन इस्ति'माल फ़रमाए ? नीज़
पेट का कुफ्ले मदीना लगाने (या'नी ख़ाहिश और भूक से कम खाने)
की कोशिश फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(11) क्या आज आप ने फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम दो² दर्स (मद्रसा, घर वगैरा) जहां
सहूलत हो दिये या सुने ? (बारी के दिनों में आयाते कुरआनी और तरजमे को पढ़े
बिगैर और आगे या पीछे से छूए बिगैर दर्स देना जाइज़ है) (दो में से घर का एक दर्स ज़रूरी है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(12) क्या आज आप ने 12 मिनट मक-त-बतुल मदीना की मत्त्बूआ किसी इस्लाही किताब और फैज़ाने सुन्नत से तरतीब वार कम अज़ कम चार सफ़हात (दर्स के इलावा) पढ़ या सुन लिये ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(13) क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से कुछ) सलातुन्तौबा पढ़ कर दिन भर के बल्कि साविक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ खुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ैरन तौबा कर के आयन्दा वोह गुनाह न करने का अ़हद किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(14) क्या आज आप ने यक्सूई के साथ कम अज़ कम 12 मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने आ'माल का मुह़ा-सबा) करते हुए जिन जिन “म-दनी इन्डियामात” पर अ़मल हुवा उन की रिसाले में ख़ाना पुरी फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(15) क्या आज आप ने हत्तल इम्कान (प्लास्टिक की नहीं) खजूरी चटाई या न होने की सूरत में ज़मीन पर सोते बक्त सिरहाने (और सफ़र में भी) सुन्नत के मुताबिक़ आईना, सुरमा, कंधा, सूई धागा, मिस्वाक, तेल की शीशी और कैंची साथ रखी ? नीज़ नींद से फ़रगत के बाद बिस्तर और उतारने के बाद लिबास तह कर के रखा ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(16) आप ने कहीं अपने घर में مَعَذَّلَةَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ जानदारों की तसावीर या स्टीकर्ज़ तो नहीं लगा रखे ? (जिस घर में जानदार की तस्वीर ता'ज़ीम की जगह रखी हो या कुत्ता हो उस घर में रहमत के फ़िरिश्ते दाखिल नहीं होते अगर आप बा इख़िलायार हैं तो हर लिबास, दीवार, बोतल, बक्स बल्कि घर की हर चीज़ पर से तसावीर का ख़ातिमा कर के सवाब कमाइये। बच्चों को जानदारों की तसावीर वाले बाबासूट भी मत पहनाइये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(17) क्या आज आप ने कम अज़ कम दो इस्लामी बहनों को इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए म-दनी इन्डिया, सुन्नतों भेरे इज्तिमाअ़ व दीगर म-दनी कामों की तरणीब दिलाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

दूसरा द-रजा 18 म-दनी इन्हामात

(18) क्या आज आप ने फ़ज्ज के साथ साथ ज़ोहर की सुन्नते क़ब्लिया फ़र्ज़ रकअतों से क़ब्ल नीज़ अ़स्र और इशा की क़ब्लिया सुन्नतें और फ़र्ज़ों के बाद वाले नवाफ़िल अदा फ़रमाए ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(19) क्या आज आप ने नमाजे तहज्जुद, इशराक व चाश्त और अव्वाबीन अदा फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(20) क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार तहिय्यतुल वुजू अदा फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(21) क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीनात, मुशा-व-रतें व दीगर तमाम मजालिस जिस की भी आप मा तहूत हैं उन की (शरीअत के दाएरे में रह कर) इत्ताअ़त फ़रमाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(22) आज आप ने घर के अपाराद के इलावा कहीं (कपड़े, फ़ोन, ज़ेवरात वगैरा) चीजें दूसरों से मांग कर तो इस्ति'माल नहीं कीं ? (सिर्फ़ अपनी चीजें इस्ति'माल कीजिये और ज़रूरत की चीज़ निशानी लगा कर अपने पास बहिराजत रखिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(23) आज आप ने (घर में या बाहर) किसी पर गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर गुस्से का इलाज फ़रमाया या बोल पड़ीं ? नीज़ दर गुज़र से काम लिया या इन्तिकाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ़ ढूँढ़ती रहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(24) किसी ज़िम्मेदार (या आम इस्लामी बहन) से बुराई सादिर होने की सूरत में तहरीरी तौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नरमी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या عَزَّوَجَلَّ مَعَذَّلَةُ اللَّهِ बिला इजाज़ते शर-ई किसी और पर इज्हार कर के आप ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(25) क्या आज आप ने किसी से ऐसे फुज्जूल सुवालात तो नहीं किये जिन के ज़रीए मुसल्मान उम्ममन झूट के गुनाह में मुज्जला हो जाते हैं ? (म-सलन बिला ज़रूरत पूछना आप को हमारा खाना पसन्द आया ? आप को सफ़र में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ? वगैरा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(26) आज आप ने कहीं ना महरम रिश्तेदारों, ना महरम पड़ोसियों नीज़ देवर या जेठ से مَعَاذُ اللَّهُ बे तकल्लुफ़ हो कर और हंस हंस कर गुफ्त-गू करने का ममूँअ काम तो नहीं किया ? क्या इन के सामने आने से कतराई और इन से शर-ई पर्दा किया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(27) क्या आज आप (घर में या बाहर) T.V, V.C.R या Internet वगैरा पर फ़िल्में, डिरामे और गाने बाजे या गुनाहों भरी ख़बरें देखने या सुनने से बचीं ? नीज़ आंखों की हिफ़ाज़त की आदत बनाने के लिये सोने के अवक़ात के इलावा कम अज़ कम 12 मिनट आंखें बन्द रखीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(28) क्या आज आप ने घर में म-दनी माहोल बनाने के लिये 19 म-दनी फूलों के मुताबिक मुस्किना सूरत में अमल किया ? नीज़ तमाम तन्ज़ीमी मस्कूफ़ियात से फ़ारिग़ हो कर मग़रिब से पहले घर पहुंच गई ? (म-दनी फूल रिसाले के आखिर में मुला-हज़ा फ़रमाइये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(29) आज आप ने कहीं (घर में और बाहर) किसी पर तोहमत तो नहीं लगाई ? किसी का नाम तो नहीं बिगाड़ा ? किसी से गाली गलोच तो नहीं की ? (किसी को चोर, जादूगर, लम्बी, ठिंगनी वगैरा न कहा करें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(30) आज आप ने दूसरे की बात इत्मीनान से सुनने के बजाए उस की बात काट कर कहीं अपनी बात तो शुरूअ़ नहीं कर दी ? नीज़ बात समझ जाने के बा वुजूद बे साख़ा हैं ? जी ? या क्या ? वगैरा बोल कर या अब्रू या चेहरे के इशारे से दूसरों को ख़्वाह म ख़्वाह अपनी बात दोहराने की ज़हमत तो नहीं दी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(31) आज आप ने घर के म-दनी मुनों को बहलाने के लिये झूट तो नहीं बोला ? (म-सलन खाना खा लोगे तो खिलोना दूंगी, सो जाओ देखो बिल्ली आ रही है वगैरा जब कि वाकिअन्त ऐसा न हो तो येह झूट है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(32) क्या आज आप दिन का अक्सर हिस्सा बा बुजू रहीं ? नीज़ बैठने में अक्सर किल्ला रु रहने की सुन्त अदा करने की सआदत पाई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(33) क्या आज आप ने मद्र-सतुल मदीना (बालिग्रात) में पढ़ने पढ़ाने की तरकीब की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(34) क्या आज आप ने राह चलते वक्त और गाड़ी में सफ़र के दौरान आंखों का कुफ़ले मदीना लगाते हुए अक्सर नीची निगाहें रखीं ? इधर उधर देखने और साइन बोर्ड वगैरा पर नज़र डालने से बचने की कोशिश की ? नीज़ किसी से बात करते वक्त अक्सर अपनी निगाह नीची रखी या मुखातब के चेहरे पर नज़रें गाड़े रहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(35) क्या आज आप ने अपने घर के बरआमदों से (बिला ज़रूरत) बाहर नीज़ किसी और के दरवाज़ों वगैरा से उन के घरों के अन्दर झांकने से बचने की कोशिश की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

तीसरा द-रजा 12 म-दनी इन्हामात

(36) कर्जदार होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तिताअत) कर्ज ख़्वाह की इजाजत के बिगैर आप ने कर्ज की अदाएगी में कहीं ताखीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आरियतन (या'नी आरिज़ी तौर पर) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुकर्रा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(37) आज आप ने किसी मुसल्मान के उघूब पर मुत्तलअ हो जाने पर उस की पर्दा पोशी फ़रमाई या (बिला मस्लहते शर-ई) उस का ऐब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिगैर उस की इजाजत) दूसरे को बता कर ख़ियानत तो नहीं की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(38) क्या आज आप को झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर और वा'दा ख़िलाफ़ी से बचने में काम्याबी हासिल हुई ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(39) क्या आज आप ने नमाज़ और दुआ के दौरान खुशूओं खुजूब़ (या'नी बदन में आजिज़ी और दिल में गिड़गिड़ने की कैफियत) पैदा करने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ दुआ में हाथों की हथेलियां आस्मान की तरफ़ रखीं या नहीं ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(40) आज आप ने आजिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर कहीं निफ़ाक़ और रियाकारी का इर्गतिकाब तो नहीं किया ? म-सलन इस तरह कहना कि मैं हळीर हूं बहुत बुरी हूं वगैरा जब कि दिल में खुद को बहुत अच्छी और नेक समझती हों ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(41) क्या आज आप ने ज़बान का कुप्ले मदीना लगाते हुए फुजूल गोई से बचने की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ इशारे से और कम अज़ कम 12 बार लिख कर बात की ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(42) क्या आज आप ने (घर में और बाहर भी) मज़ाक़ मस्ख़री, तन्ज़ बाज़ी, दिल आज़ारी और कहक़हा लगाने (या'नी खिलखिला कर हँसने) से बचने में काम्याबी हासिल की ? (बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसल्मान का दिल दुखाना कबीरा गुनाह है)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(43) क्या आज आप ने ज़रूरी गुफ़त-गू भी कम से कम अल्फ़ाज़ में निमटाने की कोशिश फ़रमाई ? नीज़ फुज़ूल बात मुंह से निकल जाने की सूरत में फ़ैरन नादिम हो कर ज़िक्रो अज़्कार किया या कम अज़ कम एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लिया ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(44) क्या आज आप ने शर-ई इजाज़त की सूरत में घर से बाहर निकलते वक्त म-दनी बुरक़अ, दस्ताने, जुराबें पहनीं ? (म-दनी बुरक़अ, दस्ताने, जुराबें शर-ई पर्दे का बेहतरीन ज़रीआ हैं। दस्तानों और जुराबों से खाल की रंगत नहीं झलकनी चाहिये)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(45) आज आप ने ऐसा चुस्त या बारीक लिबास (जिस से जिस्म की है अत ज़ाहिर हो या रंगत झलके) पहन कर **مَلْلَى** कहीं बे पर्दगी तो नहीं की ? नीज़ गुनाहों भरा फ़ेशन करने म-सलन मर्दों की तरह बाल कटवाने, अबू बनवाने, चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन बढ़ाने वगैरा से बचने की कोशिश फ़रमाई ? (नेल पोलिश लगाना वुजू और गुस्ल में रुकावट है और अफ़्शां या'नी चमकदार पाउडर से भी बचें)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(46) आप ने (बिला मस्लहते शर-ई) किसी एक या चन्द से दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ यक्सां तअल्लुक़ात रखे हैं ? (मुशा-हदा येही है कि फ़ी ज़माना उमूमन ज़ाती दोस्तियां और ग्रूप बन्दियां तन्ज़ीमी कामों की तरक़ी में रुकावट बनती हैं हां इन्दज़्ज़रुरत कहीं आने जाने में क़ाबिले ए'तिमाद और नेक इस्लामी बहन का साथ हो तो कोई हरज नहीं)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

(47) क्या आज आप ने तन्हा या केसिट इजित्माअः में कम अज़ कम एक सुनतों भरा बयान या म-दनी मुज़ा-करे की केसिट बैठ कर तवज्जोह के साथ सुनी ?

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	मीज़ान
16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	

कुप्फ्ले मदीना कारकर्दगी म-दनी माह व साल.....

तार्खना	लिख कर गुफ्त-गू	इशारे से गुफ्त-गू	निगाहें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू	कुप्फ्ले मदीना ऐनक का इस्त 'माल
	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				

खं तरी	लिख कर गुप्त-गू	इशारे से गुप्त-गू	निगाहें गाड़े बिगैर गुप्त-गू	कुप्ले मदीना ऐनक का इस्ति 'माल
	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कम अज़ कम 12 मर्तबा	कमो बेश 12 मिनट
16				
17				
18				
19				
20				
21				
22				
23				
24				
25				
26				
27				
28				
29				
30				

हफ्तावार 3 म-दनी इन्डियामात

(48) क्या आप ने इस हफ्ते सुनतों भरे इन्डियामात् में आगाज़ ही से शरीक हो कर (जितना बैठ सकों उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर अक्सर निगाहें नीची किये बयान, ज़िक्रों दुआ और सलातों सलाम में शिर्कत फ़रमाईं ?

(49) क्या आप ने इस हफ्ते इन्डियामात् के फौरन बा'द खुद आगे बढ़ कर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए कम अज़ कम एक नई इस्लामी बहन से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल कर के उन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर हासिल किया ? नीज़ दौराने गुफ्त-गू उन से और इस के इलावा दीगर इस्लामी बहनों और शोहर व महारिम से बात करते हुए अक्सर मुस्कुराने की सुनत अदा की ? सुसर के मुआ-मले में एहतियात् रहे तो अच्छा है ।

(50) क्या आप ने इस हफ्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का रोज़ा रखा ? नीज़ हफ्ते में कम अज़ कम एक दिन खाने में जब शरीफ़ की रोटी तनावुल फ़रमाई ?

माहाना 5 म-दनी इन्ड्रामात

(51) क्या आप ने इस म-दनी माह की पहली बुध को साबिका म-दनी माह का म-दनी इन्ड्रामात का रिसाला पुर कर के अपनी जैली ज़िम्मादार को जम्म करवाया ?

(52) क्या इस माह आप की इन्फ़िरादी कोशिश से कम अजू कम एक इस्लामी बहन ने फ़िक्रे मदीना कर के म-दनी इन्ड्रामात का रिसाला पुर कर के जम्म करवाया ?

(53) क्या इस माह हैज़ व निफ़ास के अद्याम में जितनी देर नमाज़ में सर्फ़ होती है उतनी देर ज़िक्रो दुरुद या दीनी मुत्ता-लअ़ा (बिग़र आयत व तरजमा छूए) करने में मस्तूफ़ रहीं ?

(54) क्या आप ने छँ कलिमे, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल, तक्बीरे तशीक और तल्बिया (या'नी लब्बैक) ये ह सब तरजमे के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) ये ह सब पढ़ लिये ?

(55) क्या आप ने अज़ान और इस के बा'द की दुआ, कुरआन शरीफ़ की कम अजू कम आखिरी दस सूरतें, दुआए कुनूत, अत्तहिय्यात, दुरुदे इब्राहीम और कोई एक दुआए मासूरा ये ह सब हुरूफ़ की मखारिज से अदाएगी के साथ ज़बानी याद कर लिये हैं ? नीज़ इस माह की पहली पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी और दिन) ये ह सब पढ़ लिये हैं ?

سالانہ 8 م-دّنیِٰ انّا مات

(56) ک्या آپ نے اس سال کم اجڑ کم اک مرتبا ساگے مدارینا ﷺ کے تماام رسائل (جو آپ کو ما'لُوم ہیں) پढ़ یا سुن لیے ہیں؟

(57) ک्यا آپ نے اس سال کم اجڑ کم اک مرتبا ساگے مدارینا ﷺ کے مورثب کردا م-دّنیِٰ فُلاؤں کے تماام پے مکلے (جو آپ کو ما'لُوم ہیں) پढ़ یا سुن لیے ہیں؟

(58) ک्यا آپ نے ہر رُف کی مخا ریج سے ادائیگی کے ساتھ کم اجڑ کم اک بار کو ر آنے پاک ناجیرا ختم کر لیا ہے؟ اور اسے اس سال دوہرہ لیا؟

(59) ک्यا آپ نے آ'لا حجّر ات ﷺ کی کیتاب تہی دل یہ مان م اہ ہاشیا یہ مان کی پہچان نیج مک-ت-بُرُل مدارینا کی مطہبُو اہ کیتابے کو پڑھیا کلیماں کے بارے میں سوال جواب اور چند کے بارے میں سوال جواب پڑ یا سुن لی ہیں؟

(60) ک्यا آپ نے بہارے شاری اہت یا اسلامی بہنوں کی نماج سے پढ یا سون کر اپنے وعڈ، گوسل اور نماج دُرُسٰت کر کے کسی مُبَالِلگا یا مہر م مُبَالِلگ کو سونا دیے ہیں؟

(61) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक बार सच्चिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي की आखिरी तस्नीफ मिन्हाजुल आबिदीन से तौबा, इख्लास, तक्वा, खौफ़े रजा, उज्ज्व व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की हिफ़ाज़त का बयान पढ़ या सुन लिया ?

(62) क्या आप ने इस साल बारी के दिनों में रह जाने वाले र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े बा'द में क़ज़ा कर लिये ? (बारी के दिनों में नमाज़ मुआफ़ है मगर रोज़े क़ज़ा करने होते हैं)

(63) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा बहारे शरीअत हिस्सा 9 से मुरतद का बयान, हिस्सा 2 से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का तरीक़ा, हिस्सा 16 से ख़रीदो फ़रोख़ा का बयान, वालिदैन के हुकूक का बयान, (अगर शादी शुदा हैं तो) हिस्सा 7 से मुहर्रमात का बयान और हुकूकुज़ौजैन हिस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया ?

रिजाए रब्बुल अनाम के काम

अन्तार की अजमेरी बेटी : अमीरे अहले सुन्नत
फरमाते हैं : जो जैल में दिये गए 10 म-दनी इन्हामात
की पाबन्दी करे वो हमेरी “अजमेरी बेटी” है।

मदीना 1 : (दीगर फ़राइज़ व वाजिबात पर अमल के साथ साथ) रोज़ाना
पांचों नमाजें (मुस्तहब वक्त में) खुशूओं खुज़ूअ़ के साथ
मस्जिदे बैत में अदा करे।

मदीना 2 : रोज़ाना फैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम 2 दर्स (मद्रसा,
घर, वगैरा) जहां सहूलत हो दे या सुने। (दो में से घर का एक
दर्स ज़रूरी है)

मदीना 3 : रोज़ाना मद्र-सतुल मदीना (बालिगा क्लास) में पढ़ने,
पढ़ाने की तरकीब करे।

मदीना 4 : रोज़ाना कम अज़ कम दो इस्लामी बहनों को इन्फ़िरादी
कोशिश के ज़रीए म-दनी इन्हामात, बालिगा क्लास,
सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़, नेकी की दा'वत व दीगर म-दनी
कामों की तरगीब दिलाए।

मदीना 5 : दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी
कोशिश, दर्सों बयान, म-दनी मश्वरा वगैरा) में रोज़ाना कम अज़
कम दो घन्टे सर्फ़ करे।

मदीना 6 : रोज़ाना नमाजे तहज्जुद, इश्राक़ व चाश्त और अव्वाबीन अदा करे ।

मदीना 7 : हफ्तावर सुन्नतों भरे इज्जिमाअ़ में अब्बल ता आखिर शिर्कत की तरकीब करे ।

मदीना 8 : रोज़ाना कम अज़ कम एक बयान या म-दनी मुज़ा-करे की केसिट सुने ।

मदीना 9 : रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के दौरान म-दनी इन्हामात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली बुध शरीफ़ अपनी जैली ज़िम्मादार को जम्म उठाकर दे ।

मदीना 10 : बारी के दिनों में रह जाने वाले रोज़ों को रखने की तरकीब करे ।

अन्तार की बग़दादी बेटी : अमीरे अहले सुन्नत ذَمَّةٌ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ फ़रमाते हैं : जो मज़्कूरा म-दनी इन्हामात पर अमल के साथ **63** में से कम अज़ कम **52** और जामिआ़तुल मदीना और मद्र-सतुल मदीना की तालिबात **83** में से कम अज़ कम **72** म-दनी इन्हामात की आमिला हो वोह मेरी “बग़दादी बेटी” है ।

अन्तार की मक्की बेटी : अमीरे अहले सुन्नत ذَمَّةٌ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةُ का इशार्दा है : जो मुन्दरिजए बाला मा’मूलात बजा ला कर मेरी अजमेरी और बग़दादी बेटी बनने के साथ

बेटी बनने के साथ साथ जैल में दिये हुए 5 म-दनी काम पाबन्दी से करे वोह मेरी “मक्की बेटी” है।

मदीना 1 : रोज़ाना कम अज़ कम **12** बार लिख कर गुफ्त-गू।

मदीना 2 : रोज़ाना कम अज़ कम **12** बार इशारे से गुफ्त-गू।

मदीना 3 : रोज़ाना कम अज़ कम **12** मिनट कुफ़्ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल।

मदीना 4 : (ज़रूरी गुफ्त-गू की नौबत आती हो तो) रोज़ाना कम अज़ कम **12** बार सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाड़े बिगैर गुफ्त-गू।

मदीना 5 : हफ्ते में कम अज़ कम एक रिसाला पढ़े।

(जो रोज़ाना कम अज़ कम एक रिसाला पढ़ने का मा'मूल बनाए उस से अमीरे अहले सुन्नत ذَانَثَ بْرَكَانُهُمُ الْعَالِيَهُ बहुत खुश होते हैं)

अ़त्तार की म-दनी बेटी : अमीरे अहले सुन्नत ذَانَثَ بْرَكَانُهُمُ الْعَالِيَهُ का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है कि जो मुन्दरिजए बाला तमाम मा'मूलात के साथ साथ मुकम्मल **63** और मज़्कूरा तालिबा मुकम्मल **83** म-दनी इन्हामात की आमिला हो वोह मेरी “म-दनी बेटी” है।

जज़बाते अ़त्तार : आह ! आह ! आह ! दिल खौफ़ज़दा है मैं नहीं

जानता कि अल्लाह ﷺ की मेरे बारे में खुफ्या तदबीर क्या है ! अलबत्ता मेरे दिल के ज़ज्बात ये हैं कि सरकारे मदीना ﷺ के सदके में मुझ पर अगर ख़ास करम हो गया तो اِن شَاءَ اللَّهُ عَزُوْجُلُّ اَمْ اَنْ شَاءَ اللَّهُ عَزُوْجُلُّ अपनी हर अजमेरी, बग़दादी, मक्की और म-दनी बेटी को जन्तुल फ़िरदौस में साथ लेता जाऊंगा ।

अ़त्तार किस से बेज़ार : जो इस्लामी बहन दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा, इन्तिज़ामी काबीनात व मजालिस वगैरा की बिला इजाज़ते शर-ई लोगों के सामने मुख़ा-लफ़त करे वोह न मेरी अजमेरी बेटी, न बग़दादी, न मक्की न म-दनी बेटी बल्कि क़ल्बे अ़त्तार उस से बेज़ार है ।

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह ﷺ ! जो रोज़ाना ये ह मज़कूरा म-दनी काम कर लिया करे उस अ़त्तार की अजमेरी और बग़दादी नीज़ अ़त्तार की मक्की व म-दनी बेटी को मअ अ़त्तार जन्तुल फ़िरदौस में अपने म-दनी महबूब का पड़ोसी बना ले ।

اَمِينِ بِجَاهِ الْبَيْتِ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

“या रब्बे करीम ! हमें मुत्तकी बना” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में “म-दनी माहोल” बनाने के 19 म-दनी फूल

- (1) घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये । (2) वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता’जीमन खड़े हो जाइये । (3) दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाठं चूमा करें । (4) वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये । (5) इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो खिलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये । (6) सन्जी-दगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्खरी करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहसें करते रहने की अगर आप की आदतें हों तो अपना रवव्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लीजिये । (7) घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो ﴿إِنَّمَا الْمُشَكِّلُ عَزَّوَجَلَّ﴾ । घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी । (8) मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी “आप” कह कर ही मुख्ताबि हों । (9) अपने मह़ल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअत के वक्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ूज़ तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअत) मुयस्मर आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो । (10) घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्विला हो और आप अगर सर-परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़ने ग़ालिब हैं कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के

बजाए सब को नरमी के साथ मक-त-बतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ओडियो/वीडियो केसिटें सुनाइये । म-दनी चेनल दिखाइये ।

“م-दनी نताइज” बरआमद होंगे । (11) घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र, सब्र और सब्र कीजिये । अगर आप ज़बान चलाएंगे तो “म-दनी माहोल” बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैतान लोगों को ज़िदी बना देता है । (12) म-दनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ येह भी है कि घर में रोज़ाना फैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये । (13) अपने घर वालों की दुन्या व आखिरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा حَسَنَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْدُّعَاء سَلَاحُ الْمُؤْمِنِ ” : है “نी दुआ मोमिन का हथियार है । (14) (الْمُسْتَدِرُ لِلْحَالَمِ ۚ حِدْبَثٌ ۖ ۱۲۱) सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए शर-ई न हो । (15) मसाइलुल कुरआन सफ़ह़ा 290 पर है : हर नमाज़ के बा’द येह दुआ अव्वल व आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल काइम होगा । (दुआ येह है :)

”اللَّهُمَّ رَبَّنَا هُبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرْبِلَتَنَا قَرْبَةً أَعْيُنْ وَاجْعَلْنَا بِالسُّقْبَيْنِ إِمَامًاً^۱“ (آيات ۱۹۱-۱۹۲، الفرقان ۷۴)

”اللَّهُمَّ آمِنْ“ (आयते कुरआनी का हिस्सा नहीं)

दिने

1 : तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना ।

(16) ना फरमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 12 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबारका सिर्फ एक बार इतनी आवाज से पढ़िये कि उस की आंखें न खुले :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طَبْلُ هُوْقُرْ أَنْ مَجِيدٌ لِّلَّهِ لَوْحٌ مَحْفُوظٌ ۝ ۱

(अव्वल, आखिर एक मर्तबा दुरूद शरीफ) याद रहे ! बड़ा ना फरमान हो तो सोते सोते सिरहाने बजीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है खुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का खौफ़ हो वहां येह अमल न किया जाए खास कर बीवी अपने शोहर पर येह अमल न करे । (17) नीज़ ना फरमान औलाद को फरमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़त्र के बा'द आस्मान की तरफ़ रुख़ कर के “يَا شَهِيدٍ” 21 बार पढ़िये । (अव्वल व आखिर, एक बार दुरूद शरीफ) (18) म-दनी इन्डिया के मुताबिक़ अमल की आदत बनाइये, और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो औलाद में नरमी और हिक्मते अ-मली के साथ म-दनी इन्डिया का निफ़ाज़ कीजिये, अल्लाह उर्ज़و جَلَّ की रहमत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा । (19) (इस्लामी भाई) पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ करें । म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में म-दनी माहोल बनने की “म-दनी बहारें” सुनने को मिलती हैं ।

دینہ

1 : तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे महफूज़ में । (٢٢٠٢١: البروج, ٣٠-٣)

کارکار्दگی براۓ ربعو جل اننام کے کام

- (1) اس ماہ کے اکسرا دینوں مें مژکورا م-دنیٰ **اننامات** پر اُمَل کی کوشش رہی ?
- (2) اس ماہ کے اکسرا دینوں مें کم اجڑ کم **12** مرتبا لیخ کر گوپت-گو فرمائی ?
- (3) اس ماہ کے اکسرا دینوں مें کم اجڑ کم **12** مرتبا **اننام** سے سے گوپت-گو فرمائی ?
- (4) اس ماہ کے اکسرا دینوں مें کم اجڑ کم **12** مرتبا چہرے پر نیگاہ گاڈے بیگڑے گوپت-گو کی کوشش فرمائی ?
- (5) اس ماہ کے اکسرا دینوں مें کم اجڑ کم **12** مینٹ کوپلے مداری کا ائنک **اننام** فرمایا ?
- (6) اس ماہ آپ نے امریارے اہلے سُننَتِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ کے کیتنے رسائل کا موتا-لآٹا فرمایا ?
 پہلیا ہفٹا تیسرا ہفٹا کُل تا'دَاد
 دوسریا ہفٹا چوٹھا ہفٹا
- (7) اس ماہ **63** م-دنیٰ **اننامات** مें سے کیتنے پر اُمَل کی کوشش رہی ?
- (8) اس ماہ کیتنے دن فیکر مداری کی سعادت ہاسیل کی ?

اَنْهَمَدَ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ اس ماہ اُنّتَار کی اجمری بیٹی اُنّتَار کی بگدا دی بیٹی اُنّتَار کی م-دنیٰ بیٹی بُنَنے کی سعادت ہاسیل ہوئی ।

اَنْشَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ آیاندا ماہ کم اجڑ کم م-دنیٰ **اننامات** پر اُمَل کی کوشش کر رکھی ।

अमल करने का आसान तरीका

रिसाले में हर म-दनी इन्धाम के नीचे 30 दिनों के खाने दिये गए हैं। रोज़ाना वक़्ते मुक़र्ररा पर फ़िक्रे मदीना (या'नी मुहा-सबे के दौरान खाने पुर करने का सिल्सिला) कीजिये जिन म-दनी इन्धामात पर अमल की सआदत मिली, नीचे खाने में (↙) का निशान बरना (○) बना दीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ بِ التَّدْرِيجِ ब तदरीज अमल में इजाफे के साथ साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत पाएंगे।

हृदयसे पाक में है : (आखिरत के मुआ-मले में) घड़ी भर गौरो फ़िक्र करना 60 साल की इबादत से बेहतर है।

(الجامع الصغير للسيوطى ، الحديث 5897 ص 365 دار الكتب العلمية بيروت)

दुआए अत्तार : या अल्लाह ! جل جل ! जो हर माह तेरी रिज़ा के लिये म-दनी इन्धामात पर अमल कर के रोज़ाना इस रिसाले में दिये गए खाने पुर कर के अपने जैली मुशा-वरत के निगरान को जम्मु करवाए तू उस के अमल में इस्तिक़ामत अत़ा फ़रमा कर उस को अपना मक़बूल बन्दा बना ले।

म-दनी माह..... 14 सि.हि.

नाम मअू वलिद्यत..... उम्र तक़ीवन.....

मुकम्मल पता.....

जैली हल्का..... हल्का..... अलाक़ा/शहर.....

आप ने **फ़िक्रे मदीना** (या'नी मुहा-सबे के दौरान खाना पुरी करने) के लिये कौन सा **वक़्त** मुक़र्रर फ़रमाया है ?

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया